कृषि क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी

कृषि कुंभ (अगस्त, 2023),
खण्ड 03 भाग 03, पृष्ठ संख्या 107–108

कृषि क्षेत्र में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी

प्रिया सिंह, डॉ0 संगीता गुप्ता, डॉ0 रूपेश सिंह एवं पूजा
चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रोद्योगिक विश्वविद्यालय,
कानपुर, (उ.प्र.), भारत।

Email Id: pyup29@gmail.com

सुप्रसिद्ध कृषि वैज्ञानिक डॉ0 स्वामीनाथन के अनुसार विश्व में खेती का सूत्रपात और वैज्ञानिक विकास का प्रारम्भ महिलाओं ने ही किया। ग्रामीण अथवा शहरी कोई भी क्षेत्र हो, महिलाये आबादी का लगभग आधा हिस्सा होती है। महिलाये समाज परिवार और राष्ट्र का एक बड़ा अंग है पुरूष और महिला को राष्ट्र के विकास में बराबर का महत्व दिया जा रहा हैं। भारत देश में 70% लोग आज भी गॉव में रहते हैं। अपने जीवकोपार्जन के लिये कृषि पर निर्भर रहते है। हम जब भी कामकाजी महिलाओं के बारे में बात करते है तो हमारे समाज में लोग ज्यादातर शहरी महिलाओं का नाम आता है जो शिक्षा के क्षेत्र, तकनीकी के क्षेत्र मे काम करती है लेकिन ऐसा बहुत कम होता है कि कामकाजी महिलाओं का नाम सुनके हमारे मन में महिला किसान की छवि बनी हो या जो महिला मजदूरी करती है उनको हम कामकाजी महिलाओं की श्रेणी में नही लाते है।

ग्रामीण महिलाये शहरो में कार्य करने वाली महिलाओं की अपेक्षा अधिक परिश्रम करती है। अगर पूरे साल की कृषि कार्य में महिला और पुरूष के योगदान की बात की जाये तो पुरूष वर्ग सिर्फ 1800 घण्टे पूरे साल मे कृषि का कार्य करते हे वही महिलाओं की बात की जाये तो 3000 घण्टे कृषि कार्य करती है, यानी किसान महिलाये हर रोज 9 घण्टे काम करती है साथ ही घर की देखभाल व पशुपालन, मुर्गी पालन अन्य काम भी करती है। 2011 की कृषि जनगणना को ध्यान में रखते हुये ये पाया गया हे की देश में 6 करोड़ से ज्यादा महिलाये खेती के काम से जुड़ी हुयी है। खाद्य और कृषि संगठन के अनुसार कृषि कार्य में ग्रामीण महिलाओ का योगदान 43% अन्य विकसित देशो में 70 से 80% है।

महिला कृषकों की समस्याएं:

महिला कृषकों की कृषिक्षेत्रो में अधिक योगदान होते हुये भी कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है महिला किसानो के पास जमीनो के मलिकाना हक नही होते पुरूषो की तुलना में उन्हे मजदूरी कम मिलती है शिक्षा सूचना संसाधन तथा उचित पर्यावरण उनको अपेक्षाकृत कम मिलता है।

महिला किसानो के लिये कार्यक्रम:

कृषि मंत्रालय द्वारा महिला किसानो का स्तर बढ़ाने के लिये निरन्तर प्रयास किये जा रहे है। कृषि कार्यो में लगी ग्रामीण महिलाओ की स्थिति तीव्र गति से सुधारी जा सके। देश में अलग अलग कृषि विश्वविद्यालयो द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्रो के द्वारा ग्रामीण महिलाओ के विकास हेतु अनेक प्रकार के

कृषि सम्बन्धित प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाये जा रहे है सिर्फ संस्थागत प्रशिक्षण की ही व्यवस्था नही है बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में **"महिला चर्चा मण्डल"** की स्थापना की गई जिसके माध्यम से कृषि उन्न्त एवं गृह विज्ञान के तकनीकी को पहुचाने का प्रयास किया जा रहा हैं।

महिला किसानो की समस्याओं का निदानः

सरकार द्वारा सहकारी समितियों में ग्रामीण किसान महिलाओं को सदस्य बनाने के लिये अभियान चलाने की आवश्यकता है जिससे महिलाओं को भी सहकारी समितियों से ऋण तकनीकी मार्गदर्शन, कृषि से सम्बन्धित नई उत्पादों के बारे मे जानकारी प्राप्त हो सके।

महिला किसान दिवसः

15 अक्टूबर को राष्ट्रीय महिला किसान दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिवस का उद्देश्य कृषि क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी में बढ़ावा देना है। केन्द्रीय कृषि मंत्री राधामोहन सिंह ने कृषि के हर स्तर (बुवाई से लेकर रोपाई, सिंचाई, कटाई इत्यादी) पर किसान महिलाओं द्वारा निभाई जा रही महत्वपूर्ण भुमिका को प्रात्साहित करने के लिये राष्ट्रीय महिला किसान दिवस मनाने का फैसला लिया। ऐसी महिलाये जिन्होने कृषि क्षेत्र में अपनी एक अलग पहचान बनायी है जैसे श्रीमती कृष्णा यादव, महिला किसानों के लिये उद्यमिता विकास के रूप मं प्रेरणा श्रोत है। श्रीमती कृष्णा यादव ''श्रीकृष्णा पिकल्स'' की मालकिन है और दिल्ली के नजफगढ़ मे रहती है। श्रीमती कृष्णा यादव ने वर्ष 2001 में कृषि विज्ञान केन्द्र ऊजता में खाद्य प्रसंस्करण एवं संवर्धन तकनीक का प्रशिक्षण लिया इन्होने करौंदे का अचार बनाने से शुरूआत की आज ये कई तरह के अचार, चटनी आदि सहित कम से कम 87 प्रकार के उत्पाद तैयार करती है। इनकी तरह कई अन्य महिलायें हैं जो कृषि क्षेत्र में कार्य करती है। श्रीमती खुशबू हरियाणा की रहने वाली है इनके पास 5 एकड़ भूमि हैं। ये गांव में स्वयं सहायता समूह आरजू की अध्यक्ष है। समूह की मदद से मसालो के प्रसंस्करण पैकेजिंग और विपणन का कार्य प्रारम्भ किया अब यह समूह एक लघु उद्योग के रूप में स्थापित हो गया है। इन्होने जैविक तरीके से उगाई गई सब्जियों का व्यापार राजधानी क्षेत्र के इलाके में सीधे किया। छोटे हरे भरे उत्पादो को ट्रे मे उगाया जाता है। जिसकी लागत 5 से 7 रूपयें आती है और प्रति ट्रे 40 से 50 रूपये में बिक जाती है इस प्रकार महिलाओं को समूह द्वारा कृषि क्षेत्र में अधिक लाभ हुआ।

श्रीमती खुशबू को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के नवोन्मेषी कृषक पुरस्कार वर्ष 2018 से भी सम्मानित किया जा चुका है। इन सब की तरह और भी कई महिलाये है जो कृषि क्षेत्र मे कार्य करती है इ स प्रकार हम कह सकते है कि महिलाये कृषि क्षेत्र में भी बढ़–चढ़ कर अपनी कुशलता का प्रदर्शन कर रही है। छोटे से कार्य क्षेत्र में अपनी श्रम कुशलता से अधिक लाभ प्राप्त कर रही है और देश को अर्थिक रूप से मजबूत बनाने में भी योगदान दे रही है इसलिये हम कह सकते है कि महिला किसी भी क्षेत्र मे पीछे नही है वह अपनी मेहनत और सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओ के लाभ से महिला किसानों के स्तर में सुधार हुये है और उन्होने एक सफल किसान बनने का उदाहरण भी प्रस्तुत किया है।

Krishi Kumbh
Online E-Magazine
www.KrishiKumbh.com